कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 11, (अप्रैल, 2024)
पृष्ठ संख्या 42–43

टमाटर की खेती में टमाटर फल भेदक या छेदक का नियन्त्रण

अवनीश कुमार[1], रामनिवास[1], ज्ञान सिंह जाट[1] एवं केशरीनाथ त्रिपाठी[2]

[1]सहायक प्रोफेसर,
सोरभ कृषि महाविद्यालय, खेड़ा हिंडौन सिटी, करौली, राजस्थान
[2]सहायक प्रोफेसर, एल.एन.सी.टी. विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

Email Id: – keshrinath.tripathi@gmail.com

परिचय

टमाटर सब्जियों कि खेती में एक मुख्य फसल है क्योंकि इसमें खाद्य पौष्टिक पदार्थ प्रचूर मात्रा में मिलते हैं। एक अत्यंत लोकप्रिय सब्जी होने के कारण देश भर में सफलता पूर्वक उगाई जाती है। इसके फल शहरों में प्रायः सालभर उपलब्ध रहते हैं। दूसरे विश्व के हर भाग में पैदावार कि हिसाब से आलू के उपरान्त टमाटर का ही स्थान है। टमाटर का उपयोग सूप, सलाद, चटनी, सॉस, आचार और दूसरी सब्जी के साथ मिलाकर खाद्य पदार्थ तैयार करने में आता है। इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज पदार्थ, कैल्शियम, फास्फोरस, विटामिन, निकोटेनिक अम्ल आदि प्रचूर मात्रा में पाए जाते हैं। टमाटर की फसल को सबसे ज्यादा नुकसान फल छेदक कीट के द्वारा होता है जो टमाटर की फसल को 50 प्रतिशत तक नुकसान पहुँचाता है। इस फसल में पौधों संरक्षण कीट की रोकथाम करते है।

फल छेदकः

यह टमाटर का सबसे बड़ा शत्रु है। पत्तों और फूलों को खाने के बाद यह फल से छेदकर अंदर से खाना शुरू कर देता है।इस कीट की इल्लियाँ टमाटर को भारी क्षति पहुँचाती है। ये कच्चे तथा पके टमाटरों में छेद करके उनके अन्दर का गूदा खा जाती हैं । ऐसे टमाटर खाने योग्य नहीं रहते । कीट के मल–मूत्र के कारण उसमें सड़न उत्पन्न हो जाती है । फलों की परीक्षण क्षमता व बाजार भाव कम हो जाता है जहाँ पर इस कीट का प्रकोप होता है वहाँ 50 प्रतिशत तक फल क्षतिग्रस्त हो जाते हैं ।

पहचानः

इस कीट का वैज्ञानिक नाम हेलियोधिस आर्मिजेरा है तथा यह लेपिडोप्टेरा गण के नीक्टुईडी कुल का कीट है । वयस्क कीट मध्यम आकार का पीले–भूरे रंग का होता है। इसकी लम्बाई लगभग 15 से 16 मि. मी. और पंखों की फैली अवस्था में चौड़ाई 30 से 40 मि.मी होती है । अगले पंखों पर भूरे रंग की कई धारियाँ होती हैं और उन पर सेम के आकार के भिन्न–भिन्न नापों के काले धब्बे पाये जाते है ।

मादा कीट पत्तियों की निचली सतह पर हल्के पीले रंग के अण्डे देती है। इन

अण्डों का ऊष्मायन काल 3–10 दिन होता है । अण्डों से निकलते ही लारवा पत्तियों को खाना आरम्भ कर देती है एवं बाद में फलों पर आक्रमण करती है । ये लारवा 10–15 दिनों में पूरी तरह से विकसित हो जाती है । इसके बाद ये भूमि में जाकर प्यूपा में बदलती है, प्यूपाकाल 8–12 दिनों का होता है । इस कीट का पूरा जीवन–चक्र 6 सप्ताह का होता है। एक साल में इस कीट की लगभग 8 पीढ़ियाँ पाई जाती है ।

नियन्त्रण

- फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए फेरोमोन ट्रैप 10 से 12 प्रति हेक्टर लगाना चाहिए।
- टमाटर के क्षतिग्रस्त फलों को खेतों से बाहर गड्ढा करके दबा देना चाहिए।
- टमाटर के खेतों में बर्डपर्च (टी आकार के) बॉस के खम्भों को कम से कम 10–15 प्रति एकड़ लगाना चाहिए ताकि उस पर कीटभक्षी पक्षियां बैठें और इल्लियों का नियंत्रण बिना खर्च के हो।
- टमाटर की फसल में फल छेदक कीट के लार्वा दिखे तो उस समय नीम तेल का 2–5 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- फल छेदक कीट के जैविक नियंत्रण के लिए ब्यूवेरिया बैसियाना 2.5 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- खेत के चारों ओर लाइट के खंभे लगाकर 10 से 12 प्रति हैक्टर लगाने से लाइट में उनकी ओर आकर्षित होते है।
- खेत की साफ सफाई करनी चाहिए।
- समय समय पर निराई गुड़ाई करनी चाहिए।
- टमाटर के खेत के चारों ओर गेंदा लगाने से जिससे गेंदे की फूलों से जमतजींदलसम नामक रसायन के द्वारा नियंत्रित किया जाता है।
- टमाटर की पंजाब छुआरा प्रतिरोधी किस्म को इवदं चाहिए।
- एनपीवी 500 लारवल एक्सट्रैक टीपल 0.1 प्रतिशत के साथ मिलाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।
- फसल की कटाई के बाद खेत की जुताई करना और इल्लियों को हाथ से चुनना चाहिए।
- एचएएनपीवी / 250 एलईध्हेक्टेयर का छिड़काव करें (250 एलई का स्टॉक घोल तैयार करें और इसे 500 लीटर पानी में मिलाएं और 1 हेक्टेयर के लिए स्प्रे करें।)
- 5 प्रतिशत एनएसकेई के साथ छिड़काव करें।
- 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस का छिड़काव या क्विनालफोस 1.5 डी/मैलाथियान एसडी/मिथाइल पैराथियान 2डी / 20 किग्रा/हेक्टेयर के साथ छिड़कना चाहिए।
- फेरोमोन ट्रैप (हेलिल्यूर) का उपयोग 5/हेक्टेयर।